UNIVERSITY NEWS 03 NOVEMBER 2026

AMRIT VICHAR

लविवि | वनस्पति विज्ञान विभाग की डॉ. नेहा साहू और शोधार्थियों ने बायोचार और पादप उपचार तकनीक से खोजा उपचार

हरित तकनीक से बचेगी औद्योगिक प्रदूषण से बंजर हो रही मिट्टी

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: लखनऊ विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने बायोचार और पादप उपचार की तकनीक से दूषित मिट्टी के उपचार की नई संभावनाएं खोज निकाली हैं। ये मानव स्वास्थ्य और खाद्य सुरक्षा के लिए वरदान बनेगी। शोध को अंतरराष्ट्रीय प्रकाशक एल्सेवियर की पुस्तक में प्रकाशित किया गया है। हरित तकनीक से खोजे गए उपचार की सबसे खास बात है कि इससे भूजल और खाद्यान्न में विषैले तत्वों के प्रवेश पर रोक लगेगी। मृदा सुधार और पर्यावरण संरक्षण पर इस शोध से लविवि के वैज्ञानिक अंतरराष्ट्रीय स्तर चर्चा में हैं। बढ़ते औद्योगीकरण, खनन, ई-कचरे तथा रासायनिक अपशिष्टों के कारण मिट्टी और कृषि पारिस्थितिकी तंत्र में हानिकारक अकार्बनिक प्रदूषकों का जमाव एक गंभीर पर्यावरणीय चुनौती बनता जा रहा है। इस समस्या के समाधान के लिए उपचार लखनऊ विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग की डॉ. नेहा साहू और शोधार्थी तृप्ति माथुर, अनुराग सिंह और नेहा यादव ने शोध किया है।



डॉ. नेहा साहू।

प्रदूषित व क्षतिग्रस्त भूमि के पुनर्वास में सहायता

- खनन और औद्योगिक गतिविधियों से प्रभावित मिट्टी में प्रदूषण, खराब संरचना और पोषक तत्वों की कमी के कारण पौधों की वृद्धि बाधित हो सकती है। बायोचार मिट्टी की जल धारण क्षमता, कुछ परिस्थितियों में पीएच और पोषक तत्वों की उपलब्धता में सुधार कर सकता है। मिट्टी से प्रदूषकों का पानी के साथ नीचे की ओर रिसाव भूजल की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है। बायोचार अकार्बनिक प्रदूषकों को बांधकर उनकी गतिशीलता और निक्षालन कम करने में मदद कर सकते हैं।



औद्योगिक प्रदूषण से जहरीली होती मिट्टी।

चक्रीय जैव अर्थव्यवस्था

- धान की भूसी, गेहूं के भूसे और अन्य उपयुक्त जैविक अवशेषों से बायोचार तैयार किया जा सकता है। इससे कृषि अवशेषों के मूल्य संवर्धन और उनके उपयोग के नए अवसर पैदा होते हैं। उपयुक्त तकनीक से तैयार बायोचार मिट्टी में कार्बन को अपेक्षाकृत स्थिर रूप में बनाए रखने में भी योगदान दे सकता है।

क्या है बायोचार

- बायोचार जैविक पदार्थों, जैसे कृषि अवशेषों को सीमित ऑक्सीजन की स्थिति में गर्म करके तैयार किया जाने वाला कार्बन समृद्ध पदार्थ है। इसकी छिद्रयुक्त संरचना और सतह के रासायनिक गुण इससे मिट्टी में मौजूद कुछ प्रदूषकों को बांधने में सहायक बनाते हैं। वहीं, पादप-उपचार में ऐसे पौधों का उपयोग किया जाता है, जो प्रदूषकों को अवशोषित करने, उनके प्रसार को सीमित करने या मिट्टी में उनके स्थिरीकरण में मदद कर सकते हैं।

बायोचार और पौधों का संयुक्त उपयोग मिट्टी में मौजूद सीसा, कैडमियम, क्रोमियम व अन्य अकार्बनिक प्रदूषकों की गतिशीलता और जैव उपलब्धता को कम करने में सहायक हो सकता है। इससे प्रदूषकों के भूजल या खाद्य श्रृंखला तक पहुंचने का जोखिम कम करने की संभावनाएं विकसित होती हैं।

HINDUSTAN

नवीन परिसर में शुरू होगा सत्यापन

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय प्रशासन ने छात्रहित में महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए द्वितीय परिसर में अध्ययनरत विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति के बायोमेट्रिक सत्यापन के लिए मुख्य परिसर आने की बाध्यता से मुक्त कर दिया है। अब नवीन परिसर, जानकीपुरम में ही छात्रवृत्ति संबंधी बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण और दस्तावेज सत्यापन की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। यह प्रक्रिया 4 नवंबर से शुरू होगी। विद्यार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए द्वितीय परिसर में सत्यापन काउंटर स्थापित किए जा रहे हैं।

AMAR UJALA

लविवि के द्वितीय परिसर में भी होगा छात्रवृत्ति सत्यापन

अभी तक सिर्फ मुख्य परिसर में ही थी बायोमीट्रिक सत्यापन की सुविधा

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के जानकीपुरम स्थित द्वितीय परिसर में पढ़ने वाले हजारों विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति के बायोमीट्रिक सत्यापन के लिए अब मुख्य परिसर के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। विवि प्रशासन ने जानकीपुरम स्थित द्वितीय परिसर में भी बायोमीट्रिक सत्यापन केंद्र स्थापित करने का निर्णय लिया है। यहां बुधवार से छात्रवृत्ति सत्यापन की प्रक्रिया शुरू होगी। इसके लिए अधिष्ठाता छात्र कल्याण (डीएसडब्ल्यू) कार्यालय की ओर से जरूरी प्रशासनिक और तकनीकी तैयारियां की जा रही हैं।

अब तक विधि, अभियांत्रिकी एवं तकनीकी संकाय, प्रबंधन विज्ञान संस्थान (आईएमएस), फार्मेसी समेत द्वितीय परिसर में संचालित अन्य पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति के बायोमीट्रिक सत्यापन और दस्तावेज की जांच के लिए मुख्य परिसर स्थित डीएसडब्ल्यू कार्यालय आना पड़ता था। दोनों परिसरों के बीच करीब 10 से 12 किलोमीटर की दूरी होने से विद्यार्थियों को समय और पैसे खर्च करने के साथ ही लंबी कतारों में भी इंतजार करना पड़ता था। नई व्यवस्था से उन्हें इस परेशानी से छुटकारा मिलेगा।



लखनऊ विश्वविद्यालय में बायोमीट्रिक सत्यापन के लिए उमड़ी विद्यार्थियों की भीड़।

विभागवार जारी होगा सत्यापन का कार्यक्रम

डीएसडब्ल्यू कार्यालय की ओर से द्वितीय परिसर में बायोमीट्रिक मशीनें, इंटरनेट सुविधा और ऑपरेटरों की व्यवस्था की जा रही है। विद्यार्थियों की भीड़ नियंत्रित करने के लिए संकाय और पाठ्यक्रमवार तिथि एवं समय निर्धारित किया जाएगा। आवेदन में किसी भी तकनीकी गड़बड़ी होने पर सहायता डेस्क भी बनाई जाएगी।

ये दस्तावेज लाने होंगे

सत्यापन के लिए विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति का ऑनलाइन आवेदन पत्र, विवि का परिचय पत्र, आधार कार्ड और संबंधित शैक्षणिक प्रमाणपत्र साथ लाने होंगे। आधार नंबर छात्रवृत्ति पोर्टल पर दर्ज नंबर से मेल खाना चाहिए। साथ ही आधार से मोबाइल नंबर लिंक होना जरूरी है, ताकि ओटीपी के जरिये प्रमाणीकरण में परेशानी न हो।

AMAR UJALA

विद्यार्थियों को तर्क की वैधता व सत्यता में अंतर समझाया

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के विधि संकाय में सोमवार को विभागीय व्याख्यान शृंखला के तहत तर्कशास्त्र का परिचय विषय पर विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। इसमें दर्शनशास्त्र विभाग के प्रो. प्रशांत शुक्ल ने विद्यार्थियों को तार्किक चिंतन के मूल सिद्धांतों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि किसी तर्क का प्रभावशाली दिखाई देना और उसका तार्किक रूप से सही होना दो अलग बातें हैं।

प्रो. शुक्ल ने कानूनी शोध, न्यायिक विश्लेषण और न्यायालयीन बहस में तार्किक सोच को महत्वपूर्ण बताया। विधि संकाय के अधिष्ठाता प्रो. आरके वर्मा, डॉ. चंद्र सेन प्रताप सिंह सहित शिक्षक और विद्यार्थी मौजूद रहे। (माई सिटी रिपोर्टर)

AMAR UJALA

बायोचार की मदद से साफ कर सकेंगे दूषित मिट्टी

लखनऊ। औद्योगिक कचरे, खनन और रासायनिक अपशिष्टों से दूषित हो रही मिट्टी को साफ करने में अब पौधे और बायोचार मददगार साबित हो सकते हैं। लखनऊ विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग के शोधकर्ताओं ने इस तकनीक की संभावनाओं पर शोध किया है। उनका शोध अध्ययन अंतरराष्ट्रीय प्रकाशक एल्सेवियर की पुस्तक में प्रकाशित हुआ है। यह शोध वनस्पति विज्ञान विभाग की सहायक आचार्य डॉ. नेहा साहू और शोधार्थियों तृप्ति माथुर, अनुराग सिंह व नेहा यादव ने तैयार किया है।



डॉ. नेहा साहू।

इसमें कृषि अवशेषों के उपयोग से पर्यावरण संरक्षण और दूषित भूमि के पुनर्वास की संभावनाएं भी बताई गई हैं। बायोचार-असिस्टेड फाइटोरिमेडिएशन और इनजीनियर कंटामिनेंट्स शीर्षक वाले इस अध्याय में बताया गया है कि कृषि अवशेषों से तैयार बायोचार और विशेष पौधों के संयुक्त इस्तेमाल से मिट्टी में मौजूद सीसा, कैडमियम और क्रोमियम जैसे जहरीले तत्वों का असर कम किया जा सकता है। बायोचार मिट्टी में इन तत्वों को बांधकर पौधों और पानी तक उनकी पहुंच सीमित करने में मदद करता है। इससे भूजल और खाद्य फसलों के दूषित होने का खतरा घट सकता है। साथ ही मिट्टी की जल धारण क्षमता और उपजाऊपन में भी सुधार की संभावना है। (माई सिटी रिपोर्टर)

NBT

दूषित मिट्टी को साफ करने की नई विधि खोजी

■ NBT रिपोर्ट, लखनऊ : औद्योगीकरण, खनन और ई-कचरे से जहरीली हो रही मिट्टी के उपचार के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय (LU) के वैज्ञानिकों ने टिकाऊ व ऑर्गेनिक तकनीक खोजी है। वनस्पति विज्ञान (बॉटनी) विभाग की डॉ. नेहा साहू के इस शोध को प्रतिष्ठित जर्नल 'एल्सेवियर' में जगह मिली है।

शोध के अनुसार, कृषि अवशेषों से सीमित ऑक्सीजन में तैयार 'बायोचार' और पादप-उपचार (पौधों) के संयुक्त इस्तेमाल से मिट्टी में मौजूद सीसा, कैडमियम और क्रोमियम जैसे खतरनाक तत्वों का असर कम किया जा सकता है। बायोचार की छिद्रयुक्त बनावट प्रदूषकों को बांध लेती है, जबकि चुनिंदा पौधे इन्हें सोखकर मिट्टी में स्थिर कर देते हैं।

AMRIT VICHAR



सामाजिक संस्थान का भ्रमण करते विधिक सहायता के विद्यार्थी।

छात्रों ने किया भ्रमण

लखनऊ, अमृत विचार : लखनऊ विश्वविद्यालय के विधिक सहायता केंद्र द्वारा नालसा दिवस के उपलक्ष्य में दृष्टि सामाजिक संस्थान का भ्रमण किया गया। वर्ष 1990 में स्थापित यह संस्थान विशेष आवश्यकता वाले एवं निराश्रित बच्चों की देखभाल के लिए समर्पित है। मिशन वात्सल्य के अंतर्गत भी बच्चों को संस्थान में आश्रय प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर विधिक सहायता केंद्र की टीम ने बच्चों के बीच विस्कुट वितरित किए, जो प्रेम एवं अपनापन का प्रतीक था। संस्थान द्वारा बताया गया कि बच्चों की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु राशन एवं डायपर की अत्यधिक आवश्यकता रहती है।

AMRIT VICHAR

आगाज का समापन

लखनऊ, अमृत विचार : लविवि के द्वितीय परिसर में चार दिवसीय खेल महोत्सव 'आगाज का सोमवार को समापन हो गया। समापन समारोह में मुख्यअतिथि प्रो. जेपी सैनी ने विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र दिए। महोत्सव में विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों, विभागों, संबद्ध महाविद्यालयों व छात्रावासों की 150 टीमों ने वॉलीबॉल, क्रिकेट, रस्सीकशी और टग-ऑफ-वॉर सहित कई खेल स्पर्धाओं में प्रतिभाग किया।



विजेता खिलाड़ियों को पदक व प्रशस्ति पत्र देते कुलपति प्रो. जेपी सैनी।

DAINIK JAGRAN

दूषित मिट्टी के उपचार की राह होगी आसान

- बायोचार व पौधों की संयुक्त तकनीक से विषैले तत्वों का घटेगा प्रभाव
- मानव स्वास्थ्य और खाद्य सुरक्षा के लिए वरदान बनेगी हरित तकनीक

लखनऊ : औद्योगीकरण, खनन, ई-कचरे और रासायनिक अपशिष्ट के कारण मिट्टी में हानिकारक अकार्बनिक प्रदूषकों का जमाव पर्यावरणीय चुनौती बनता जा रहा है। इससे पौधों की वृद्धि बाधित हो सकती है। इस समस्या के समाधान के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय की शोध टीम ने बायोचार और पादप उपचार की भूमिका पर एक शोध अध्याय किया है।

वनस्पति विज्ञान विभाग की सहायक आचार्य डा. नेहा साहू और शोधार्थी तृप्ति माथुर, अनुराग सिंह व नेहा यादव की ओर से तैयार शोध अध्याय में बताया गया है कि बायोचार और उपयुक्त पौधों का संयुक्त उपयोग मिट्टी में मौजूद सीसा, कैडमियम, क्रोमियम और अन्य अकार्बनिक प्रदूषकों की गतिशीलता और जैव-उपलब्धता को कम करने में सहायक हो सकता है। इससे प्रदूषकों के भूजल या खाद्य श्रृंखला तक पहुंचने का जोखिम कम करने की संभावनाएं विकसित होती हैं। हालांकि, उपचार की सफलता प्रदूषक के प्रकार, मिट्टी की प्रकृति और पर्यावरणीय परिस्थितियों पर निर्भर करती है। यह शोध एल्सेवियर की पुस्तक में प्रकाशित किया गया है। वि.



डा. नेहा साहू • लवि

ऐसे तैयार होता बायोचार

धान की भूसी, गेहूं के भूसे और अन्य उपयुक्त जैविक अवशेषों से बायोचार तैयार किया जा सकता है। इससे कृषि अवशेषों के मूल्य संवर्धन और उनके उपयोग के नए अवसर पैदा होते हैं। उपयुक्त तकनीक से तैयार बायोचार मिट्टी में कार्बन को अपेक्षाकृत स्थिर रूप में बनाए रखने में भी योगदान दे सकता है। बायोचार का उपयोग कृषि अपशिष्ट प्रबंधन और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने में सहायक होगा।

DAINIK JAGRAN

कल से लवि द्वितीय परिसर में शुरू होगा छात्रवृत्ति सत्यापन

जास • लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के जानकीपुरम स्थित द्वितीय परिसर के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति की बायोमीट्रिक सत्यापन के लिए मुख्य परिसर नहीं आना पड़ेगा। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए द्वितीय परिसर में ही बायोमीट्रिक सत्यापन केंद्र स्थापित किया जाएगा। यहां चार नवंबर से छात्रवृत्ति सत्यापन शुरू होगी।

अधिष्ठाता छात्र कल्याण कार्यालय इसकी तैयारी कर रहा है। पहले द्वितीय परिसर के विधि संकाय, अभियांत्रिकी व तकनीकी संकाय, इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट साइंसेज, फार्मेसी समेत अन्य पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों को बायोमीट्रिक सत्यापन और दस्तावेजों की जांच के लिए मुख्य परिसर स्थित डीएसडब्ल्यू कार्यालय आना पड़ता था। दोनों परिसरों के बीच करीब 10 से 12 किलोमीटर की दूरी होने से विद्यार्थियों को समय और परेशानी का सामना करना पड़ता था। नई व्यवस्था के तहत द्वितीय परिसर में ही बायोमेट्रिक काउंटर स्थापित किए जाएंगे। इसके लिए मशीनों, इंटरनेट कनेक्टिविटी और ऑपरेटरों की व्यवस्था की जा रही है। भीड़ नियंत्रित करने के लिए संकायवार तिथि और समय का रोस्टर भी जारी होगा। आवेदन में तकनीकी गड़बड़ी होने पर समाधान के लिए सहायता डेस्क भी बनेगी।

खिलाड़ियों को दिए गए पदक

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के द्वितीय परिसर में आयोजित चार दिवसीय खेल महोत्सव 'आगाज-2026' का सोमवार को विश्वकर्मा सभागार में पुरस्कार वितरण समारोह के साथ समापन हुआ। समापन समारोह में कुलपति प्रो. जेपी सैनी ने विजेता खिलाड़ियों को पदक और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। आयोजन समिति के प्रभारी प्रो. अनुराग श्रीवास्तव, संयोजक डा. उग्रसेन वर्मा आदि मौजूद रहे। वि.

प्रो. महेंद्र बने प्रोवोस्ट



लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान विभाग के प्रोफेसर महेंद्र अग्निहोत्री को लाल बहादुर शास्त्री हास्टल का प्रोवोस्ट बनाया गया है। उनका कार्यकाल कार्यभार ग्रहण करने की तिथि से तीन साल या अग्रिम आदेशों तक रहेगा। कुलपति के आदेश पर कुलसचिव डा. भावना मिश्रा ने मंगलवार को पत्र जारी कर दिया। वि.

I NEXT

हर तरफ हेल्थॉन का हल्ला, रनिंग के लिए LU के स्टूडेंट्स भी तैयार!

लखनऊ यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट्स में दिखा उत्साह, फॉर्म भरकर दूसरों को भी किया प्रेरित

